

बस यूं ही...



शांता पारेख, इन्दौर
9425311944

शुक्ल जी और विनय पत्रिका

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी कमऊँचाई के गोल्ड, मोल्ड से सुटबूट में टाई पहने छोटी भुंज वाले अप्रतिम साहित्यकार हैं, उस युग में ब्रिटिश प्रभाव के कारण यही चेहरा भूया था। कमसे कम उत्तरप्रवासीय शहरों की तो, पर वेश भूषा का क्या है भारतेंदु की को देसी ही थी यहाँ बात मुझे बाबातुलसी की करनी है भानस को नहीं, विनयपत्रिका की, जिसके लिये आचार्य शुक्ल ने जो कहा बहुत ही मन को भा गया।

वे लिखते हैं एक बाबा अपने सारे दुर्गुणों को स्वयं देखा है दुःखी होता है फिर प्रभु से ऐसी याचना करता कि मैं नीच खलकामी हूँ हजारों कमियाँ हैं मुझमें इतनी कि गिन ही नहीं सकते, तो अब आप तो सब जानते हो नाम आपका पतित पावन है दुम पारस मैं लौटूँ हूँ तो आपका काम है।

मुझे सोना बनाना आप दुनिया में पूजे ही इसीलिए होते, बाँल आपके पाले में हैं अगर उद्धार नहीं किया तो सोचो कितनी जग हवाई आपकी होगी, मेरा क्या है मैं हूँ ही नीच, आपकी कितनी बदनामी मेरे जैसे नीच के कारण होगी।

क्या बर्कोक है, उनके ही जाल में प्रभु को फंसा के रख दिया निरत पट दोनो मेरी, ये विनय पत्रिका का सार है। सुधीजन जानते हैं, पर शुक्ल जी का कथ्य इस पर है कि कि दुनिया में सब लोग जानते हुये भी अपने दोष छिपाते उसके कारण कई प्रकार का छल छत्र करते हैं ये तुलसी बाबा हैं जो अपने दोष देख रहा, ऊपर वस्त्र को तरह लहरा कर सबको दिखा रहा, और देखो देखो मुझमें ये दोष हैं, ये कैसा आदमी है विचित्र प्रकार का सारी दुनिया से उल्टी चाल चल रहा है तो देखो मुझे धिक्कारो, धिक्कार फिहार करो, मेरी भर्त्सना करो बदनाम करो, ये विनय की पराकाष्ठा है, हीन भावना नहीं विश्वास है।

आज नहीं युगो युगो से लोग अपनी खुबीयो के कसीदे पढ़ते हैं जो कई बार बूढ़े भी होते अतिशयोक्तिपूर्ण भी होते हैं ये उल्टा दुनिया है, जो जानता इससे बच नहीं सकते फिर पचार प्रसार भी कर रहा है व फिर प्रभु को ब्लेकमेल कर रहा है ऐसा विनय गुण किन्तुने सौते में है।

न भूतों न भवती वाली बात हैं ये शुक्लजी का अनुद्य अरंज है तुलसी के विनय के आकलन का, कथ्यों ने व्याख्या की है विनय पत्रिका की पर ये विरली व्याख्या है।

उनके लेखों के कारण ये हिंदी के बेकन माने जाते हैं, हिंदी साहित्य का इतिहास उनका प्रामाणिक माना जाता है उनके बाद कई हुये निन्द दुलार वाजपेई व आचार्य नरिंद, मगर गिरसैन के बाद शुक्ल जी को ही आधार अधिकांश लोग ने बनाया शोध तो निरंतर होते रहते हैं पर इनके विराट रचना कर्म की जितनी स्तुति की जाए कम ही होगी प्रगमराज का समुत् प्रणय्य है।

शहर की बदहाल यातायात व्यवस्था को लेकर दायर याचिकाओं पर सुनवाई आज



इन्दौर। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय खंडीपट इन्दौर में इन्दौर शहर की बदहाल यातायात व्यवस्था को लेकर दायर करीब एक दर्जन से ज्यादा जनहित याचिकाओं तथा हाईकोर्ट द्वारा खसत : सज्ञान लेकर दायर की गई याचिका पर आज सुनवाई संभावित है।

गत सुनवाई पर सरकार को बताया था कि इन याचिकाओं की सुनवाई के दौरान कोर्ट ने जो आदेश जारी किए, उनका पालन करने के लिए क्या-क्या कदम उठाए। जो कि आज सुनवाई दौरान सरकार बता सकती है।

बता दें कि शहर की बदहाल यातायात व्यवस्था को लेकर दायर इन एक दर्जन से ज्यादा याचिकाओं में शहर में लगातार लगने वाले ट्रेफिक जाम, चौहौल पर ट्रेफिक जवानों द्वारा यातायात के संचालन के बजाय बसूली करने, सीसीटीवी कैमरों की कमी, सड़क और फुटपाथ पर अतिक्रमण, बंद सीसीटीवी कैमरे, बंद पड़े ट्रेफिक सिग्नल, गड़बड़, जलप्रवाह के साथ ही वाहनों पर प्रतिबंधित नंबर प्लेट और हट्टर लगने के मुद्दों को भी उठया गया है।

कार्टून कोना



और बागैर यूनिफॉर्म वाली मारल पुलिस में ईसा नियत कहा ?

बागैर यूनिफॉर्म वाली मारल पुलिस भी तो दिखाई दी

पुनर्सृजन

कालाकुंड में तैयार हो रहा वीकेंड पिकनिक और जंगल कैपिंग डेस्टिनेशन

आदर्श पर्यटन गांव में बारहमासी सड़क हुई तैयार, एक नदी पर 4 ब्रिजों का काम शीघ्र होगा प्रारंभ

इंदौर। इंदौर से 20 किमी दूर स्थित कालाकुंड अपनी प्राकृतिक वादियों और शांत आदवासी गांव अपनी अनोखी मिठाई कलाकंद के लिए प्रसिद्ध है। साथ ही यह वीकेंड पिकनिक और जंगल कैपिंग डेस्टिनेशन के लिए पर्याप्त विशेषता वाले आदर्श पर्यटन ग्राम के रूप में विकसित हो रहा है। घने और वन औषधियों से भरे जंगल को बचाते हुए यहां एमपीआरआरडी द्वारा लगभग 10 किमी की सड़क का काम पूरा किया जा चुका है। यहां की सीढ़ीय को निखारने वाले नदी पर ब्रिज नहीं बनने से पहाड़ी नदी के कारण कई दुर्घटनाएं हो चुकी हैं, इस कारण यहां पर्यटक आने से बचते हैं।



महाप्रबंधक श्री लोकेन्द्र मंडळों ने बताया कि वन औषधियों से भरपूर इस क्षेत्र के घने जंगल को बचाते हुए सड़क का निर्माण कार्य वर्ष 2024 में पूरा होगा। 30 मई को इसी गांव में कलेक्टर श्री शिवम वर्मा ने रात्रि चौपाल लगाई थी। इस दौरान ग्रामीणों की पहली सबसे अहम मांग ब्रिज निर्माण की थी। इस मांग को पूरा करने के लिए निविदा प्रक्रिया चल रही है। अब इसी वर्ष यहां ब्रिज का निर्माण प्रारंभ करने की स्थिति तक पहुंच गए हैं।



पर्यटकों के लिए हेरिटेज ट्रेन के अलावा सड़क मार्ग भी होगा विकल्प

विन्यासचल पर्वत श्रेणी की पहाड़ियों के बीच बसे 7 से अधिक आदिवासी गांवों में 20 से अधिक होम स्टे बने हुए हैं। यहां बड़ी संख्या में पर्यटक ग्रामीण पर्यटकों को जीवन चर्चा का आनंद की अनुभूति का अहसास करने पहुंचते हैं। यहां के लिए पतालापनी से हेरिटेज ट्रेन से पर्यटक तो आते ही हैं, लेकिन

जो अपने निजी चार पहियों को दो पहियों वाहन से ब्रिज नहीं होने से बाहरिश में पहुंच नहीं पाते। इसके अलावा ग्रामीण आदिवासियों का बाहरिश में शहर से संबंध कट जाता है। ऐसे के ब्रिज बनने से बड़ी आबादी भी इस विकल्प का उपयोग कर पाएंगी।

गांव और भैंस के दूध बनी कलाकंद विशेष आकर्षण

कालाकुंड गांव के कई गांव और भैंस

फसुयालक कलाकंद बनाने में जुटे हैं। गांव और भैंस के शुद्ध दूध व कम शर्करा से पारंपरिक तरीके बनने वाली दानेदार कलाकंद मुंह में मेल जाने वाली मिठाई है। इस गांव को आदर्श पर्यटन ग्राम बनाने की दिशा में शासन प्रशासन द्वारा लंबे प्रयास से किए जा रहे हैं। घने जंगल और वनौषधियों को बचाते हुए, यहां बारह मासी सड़क का निर्माण कर लिया गया है।

आंगनवाडियों, स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र और शासन दुकानों तक ग्रामीणों की पहुंच होगी आसान

4 ब्रिज बनने से यहां पहुंचीयों में बसे 8 गांवों के ग्रामीणों की पहुंच स्वास्थ्य केंद्र के अलावा स्कूल, आंगनवाडियों और शासन दुकानों तक पहुंच सुगमता से हो सकेगी। पहाड़ी नदी चोखल कभी भी बाहरिश होने मार्ग अवरुद्ध कर देती है।

इंदौर में सजी सुरों से भरी यादगार शाम

इंदौर। आनंद मोहन माथुर ऑडिटोरियम में संगीत, सुरों और जोश का शानदार संगम देखने को मिला, जब मुंबई के प्रतिभाशाली गायक एवं लाइव परफार्मेंस अर्जुन से अपने भव्य म्यूजिकल शो Arjun Live 2.0 'से दर्शकों का दिल जीत लिया। सदाबहार बॉलीवुड रेडो गीतों और नए दौर के लोकप्रिय गानों से सजी इस संगीतमय शाम ने संगीत प्रेमियों को यादों, भावनाओं और मनोरंजन से भरपूर एक यादगार अनुभव दिया।



प्रतिष्ठित अतिथियों की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही। इनमें श्री सुखदेव सिंह घुमन, मैनेजिंग डायरेक्टर, डिजियाना इंडस्ट्री प्रॉडक्ट लिमिटेड; श्री सुधाभाष खंडेलवाल, इंदौर के प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं रिविबर डाइजेस्ट के संस्थापक; श्री राजेश नेमा, प्रगति किरणस के संस्थापक; श्री रवि साहू, रवि



होम इंडस्ट्री से, प्रदेश साहू समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए, श्री सतीश साहू, समाजसेवी; श्री दिनेश साहू, टीवीएस शोरूम संचालक; डॉ. रसुवै मेवाड़ा तथा डॉ. दीपक मोहन शास्त्रिण रहे। इन सभी विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की

राजेश जैन युवा बने मक्सी ट्रस्ट के अध्यक्ष

इंदौर। मालवा के प्रसिद्ध तीर्थ श्री मक्सी विश्वनाथ स्थित श्री राज गजेंद्रसूरी गुरु ज्ञान पीठ ट्रस्ट मंडल की बैठक आज इंदौर के एयरपोर्ट रोड स्थित केसरी वाडिका में संपन्न हुई। बैठक में तीर्थ के विकास, व्यवस्थाओं एवं आगामी कार्ययोजनाओं से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। द्वािताय्यी गुरुज संघ चतुर्थास के अंतर्गत विराजित गजेंद्रसूरी परम पूज्य आचार्य श्रीराम विनयसेनसूत्रधरजी महाराज साहब एवं वरिष्ठ मुनिज श्री विद्वतर विनयजी महाराज साहब ने अपने श्रीमुख से नवीन ट्रस्ट मंडल की घोषणा की। घोषणा के अनुरार, इंदौर के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री राजेश जैन युवा को ट्रस्ट मंडल का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। वहीं, मक्सी निवासी श्री हेमंत वेदपुत्र को महामंत्री की नियुक्ती सीपी गई। नवीन ट्रस्ट मंडल में श्री दिलीप जैन (केलुवर) एवं श्री अशोक मिश्रा (उज्जैन) को उपाध्यक्ष, श्री धनंजय बोहरा (इंदौर) को कोषाध्यक्ष, श्री धीरेंद्र कोलत (जाबरा) को सार्वभौम तथा श्री लक्ष्मण डुंगरवाल (इंदौर) को प्रचारसूत्री नियुक्त किया गया। इसके साथ ही श्री हिराचंद जी जैन (हेटावावर), श्री अशोक जैन (नेवावा), श्री संजय कोठारी (उज्जैन), श्री राज मेहता (उज्जैन), श्री हिराल जैन (कड़वा), श्री हंसराज कटारिया (मक्सी), डॉ. अरुण ओसवाल (मक्सी) एवं श्री रौलेन्द्र तलेश (उज्जैन) को ट्रस्टी बनाया गया।



प्रदेश में फार्म-6 प्राप्त करने की प्रक्रिया जारी, अब तक 6 लाख 6 हजार से अधिक आवेदन प्राप्त

इंदौर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार संपूर्ण प्रदेश में वृध लेवल अधिकारियों (वीएलओ) द्वारा फार्म-6 प्राप्त करने की प्रक्रिया जारी है। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री संजीव कुमार झा ने बताया कि 1 अक्टूबर से अब तक प्रदेश में कुल 4 लाख 6 हजार 338 फार्म 6 प्राप्त हुए हैं। इनमें 18 से 19 आयु वर्ग के 1 लाख 92 हजार 851 फार्म शामिल हैं।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री झा ने बताया है कि फार्म-6 प्राप्त करने के लिए प्रदेशभर में विभिन्न स्थानों में शिविर लगाए जा रहे हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से पात्र नागरिकों को मतदाता सूची में नाम जुड़वाने का अवसर प्रदान किया जा रहा है।

निष्पक्ष श्रुभम दुबे स्तंभकार और राजनीतिक विप्लवज



10 अक्टूबर की सुबह दिल्ली के आसमान में जो कुछ घटा, उसने भारतीय लोकतंत्र के प्रशासनिक और नैतिक ढांचे को खंडित करने पर कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। मुंबई से दिल्ली आ रही एक सामान्य वाणिज्यिक उड़ान जैसे ही इंदौर गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरी, सुरक्षा एजेंसियों ने कार्यक्रम जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दिवके, प्रवक्ता सोहन दुस और उनके सहयोगियों को विमान के भीतर ही रोक लिया और हिरासत में ले लिया। यह कोई आम प्रशासनिक निष्पक्ष कार्यक्रम नहीं थी, बल्कि मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के विशेष और विशेष मतदाता सूची संशोधन (सूक्ष्म) की पारदर्शिता को लेकर जंतर-मंतर पर होने वाले एक पूर्वाह्न प्रदर्शन को शुरू होने से पहले ही कुचलने की चेष्टा सोचो-समझो

निष्पक्षता माँगोगे तो अपराधी बनाए जाओगे

फराइद में ज़ब्रौ से लेकर सड़कों पर ज़केलबंदी तक- सारकार की ग़ज़र में अब हज़क नज़िना ही सबसे बड़ा अपराध है।



अभिजीत दीपके पुलिस हिरासत में ! सौरव और आशुतोष भी हुए डिटेन

संवाद कायम करने के बजाय प्रशासन उन्हें एक सुरक्षा कवच प्रदान करने पर क्यों आमादा दिखाता है? यह सवाल आज भारत के उस हर नागरिक की चेतना को झकझोर रहा है, जो यह मानता है कि लोकतंत्र केवल

चोटों की गिनती का नाम नहीं, बल्कि असम्प्रति और विपक्ष के अधिकार को जीवित रखने की एक अनवरत प्रक्रिया है। कानूनी परिप्रेक्ष्य में धारा 107 या 126 के तहत 'निष्पक्ष हिरासत' को भले ही सार्वजनिक शांति बनाए रखने का एक तकनीकी औजार माना जाता हो, लेकिन जब इस कानूनी प्रक्रिया को इस्तेमाल असम्प्रति की हर एक लहर को जन्म लेते हैं घोटने के लिए होने लगे, तो यह एक घोषित नहीं बल्कि 'निष्पक्ष' आपातकाल का कड़वी आहट जैसी लगती है। एक कमर्शियल प्लाट के बंद दरवाजे के भीतर घुसकर किसी नागरिक को उसकी नागरिक स्वतंत्रता से वंचित करने न केवल अंतर्राष्ट्रीय उद्धरण सुरक्षा के प्रोटोकॉल पर धक्का है, बल्कि नागरिकों के बुनियादी संवैधानिक अधिकारों का सीधे तौर पर हनन भी है। जब सरकार का हर कदम शालाक, बचावपूर्ण और दमनकारी हो जाता है, तो जनता के मन में यह धारणा पक्की होने लगती है कि रात में कुछ काल है, आखिर चुनाव आयोग जैसी

स्वतंत्र संवैधानिक संस्था को किसी भी राजनीतिक जंजल या युवा आक्रोश के बारे में आने से बचाने के लिए इतना भार प्रशासनिक जैरे क्यों लगाया जा रहा है? आज का भारतीय युवा नैतिकता, पारदर्शी चुनाव प्रणाली और अपनी भागीदारी के लिए सड़कों पर उतरना चाहता है, लेकिन उसे हर बार कानून-व्यवस्था के नाम पर जेलों, डिटेन सेंट्रों और पुलिस की लाठीचार्ज का सामना करना पड़ता है। यह जनता की आवाज खनने के लिए राज्य तंत्र अपनी पूरी शक्ति झोंक दे और निष्पक्षता की मांग करने वालों को ही अपराधी बनाकर खड़क कर दे, तो यह मान लेना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सच ने संवैधान का रास्ता खोड़कर केवल बल प्रयोग की भाषा सीख ली है। आज देश एक बेहद संवेदनशील चौराहे पर खड़ा है, जहाँ सुभ्रम कोर्ट के हस्तक्षेप और नागरिकों की सजगता ही यह तथ्य करेगी कि क्या भारत एक जीवंत लोकतंत्र बना रहेगा या कानून के आवरण के पीछे छिपे हुए प्रशासनिक तानाशाही का शिकार होकर बह जाएगा।